Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095
doi :https://doi.org/10.32628/GISRRJ

हिंदी साहित्य में राँगेय राघव का योगदान

डॉ अमलेन्दु कुमार अंजन
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, टी. एन. बी. कॉलेज भागलपुर, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार।

Article Info
Volume 8, Issue 4
Page Number : 09-13

Publication Issue :
July-August-2025

Article History
Accepted : 25 June 2025
Published : 10 July 2025

भूमिका : साहित्य के आधुनिक युग में जिन रचनाकारों ने साहित्य को सामाजिक सरोकारों और यथार्थ के धरातल से जोड़ने का कार्य किया, उनमें राँगेय राघव (1923–1962) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे मात्र साहित्यकार नहीं थे, बल्कि एक विचारक, सामाजिक दृष्टा, और परिवर्तन के प्रतीक भी थे। उन्होंने अपने उपन्यासों, कहानियों और नाटकों के माध्यम से भारत के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक यथार्थ को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

मुख्य शब्द : राँगेय राघव,सामाजिक यथार्थवाद,हिंदी उपन्यास,प्रगतिशील साहित्य,स्त्री विमर्श,भाषा और शिल्प, साहित्यिक प्रासंगिकता

राँगेय राघव की लेखनी में आदर्श और यथार्थ का संतुलन, शोषण के विरुद्ध संघर्ष और मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा जैसे तत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इस लेख में उनके साहित्यिक अवदान की गहराई, विविधता और प्रासंगिकता का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

जीवन परिचय एवं साहित्यिक यात्रा : राँगेय राघव का जन्म 17 जनवरी 1923 को उत्तर प्रदेश के आगरा जिले के गांव 'अहमदपुर' में हुआ था। उनका मूल नाम तिरुक्कुरल राघवन था, परंतु हिंदी साहित्य में वे 'राँगेय राघव' के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और स्वतंत्र लेखन के क्षेत्र में सक्रिय हो गए। उनका जीवनकाल बहुत लंबा नहीं रहा, परंतु उन्होंने जो लिखा वह चिरस्थायी बन गया।

राँगेय राघव की साहित्यिक यात्रा मुख्यत: 1940 के दशक में प्रारंभ हुई और 1962 में उनके निधन तक सक्रिय रही। इस काल में उन्होंने अनेक उपन्यास, कहानियाँ, नाटक और निबंध लिखे। उनका साहित्य भारतीय जनमानस के संघर्ष, पीड़ा और मुक्ति की चेतना का संवाहक बना।

अध्ययन की प्रणाली : यह शोधात्मक लेख एक गुणात्मक (Qualitative) अध्ययन पर आधारित है जिसमें राँगेय राघव के साहित्यिक योगदान को यथासंभव वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

सहारा लिया गया है। प्राथमिक स्रोतों में लेखक की मूल रचनाएँ जैसे उपन्यास, कहानियाँ और नाटक शामिल हैं, जबकि द्वितीयक स्रोतों में आलोचनात्मक ग्रंथ, समीक्षाएँ, शोध लेख एवं साहित्यिक जर्नल से प्राप्त टिप्पणियाँ सम्मिलित हैं।

इस लेख के लिए चयनित उपन्यासों जैसे 'कब तक पुकारूँ', 'मुर्दों का टीला', 'घरौंदा', तथा प्रमुख कहानियों और नाटकों का सघन पाठ विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण में कथ्य, चरित्र चित्रण, सामाजिक दृष्टिकोण, स्त्री–पुरुष संबंध, वर्ग संघर्ष, तथा सांस्कृतिक चेतना को केंद्र में रखा गया है। इसके अतिरिक्त आलोचकों की टिप्पणियों जैसे नामवर सिंह, रामविलास शर्मा एवं नागेन्द्र द्वारा दिए गए साहित्यिक मूल्यांकन को भी अध्ययन में समाहित किया गया है।

साहित्यिक विधाओं का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए राघव के शिल्प और भाषा के विशेषताओं को उभारने का प्रयास किया गया है। साथ ही, समकालीन सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य में उनके साहित्य की प्रासंगिकता को ऐतिहासिक–सांस्कृतिक संदर्भों में रखा गया है।

शोध की प्रक्रिया में विषय वस्तु को तीन मुख्य स्तंभों में विभाजित किया गया:

(1) साहित्यिक रचनाएँ और उनका यथार्थवाद,

(2) विचारधारा और सामाजिक प्रतिबद्धता,

(3) आधुनिक संदर्भ में मूल्यांकन।

इस प्रकार अध्ययन प्रणाली ने एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया है, जो राँगेय राघव के साहित्य को सामाजिक और वैचारिक संदर्भ में देखने में सहायक सिद्ध होता है।

उपन्यास साहित्य में योगदान: राँगेय राघव के उपन्यास हिंदी साहित्य की एक बड़ी उपलब्धि माने जाते हैं। उन्होंने सामाजिक यथार्थ को अत्यंत सजीव रूप में चित्रित किया। उनके प्रमुख उपन्यासों में 'कब तक पुकारूँ', 'घरौंदा', 'मुर्दों का टीला', 'चंद्रकांता की वापसी', 'सीधा साधा रास्ता' आदि शामिल हैं।

1. कब तक पुकारूँ (1957) : यह उपन्यास राँगेय राघव का सबसे प्रसिद्ध और चर्चित उपन्यास है। इसमें भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद, आर्थिक विषमता और स्त्री–पुरुष संबंधों की जटिलताओं को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया गया है। उपन्यास का नायक 'सुधाकर' आत्मसंघर्ष और सामाजिक बदलाव का प्रतीक है। यह रचना हिंदी में सामाजिक यथार्थवाद की दृष्टि से मील का पत्थर मानी जाती है।

2. घरौंदा: 'घरौंदा' उपन्यास में मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाओं और पारिवारिक संबंधों के जटिल पक्षों का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास के माध्यम से राघव ने आर्थिक असुरक्षा, नौकरी की अनिश्चितता, और संबंधों की टूटन को उजागर किया है।

3. मुर्दों का टीला : इस ऐतिहासिक उपन्यास में उन्होंने सिंधु घाटी सभ्यता की पृष्ठभूमि में एक कथा रची है। यह उपन्यास ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक चेतना का सुंदर समन्वय है जिसमें समाज की विकास यात्रा का चित्रण किया गया है।

कहानी साहित्य में योगदान: राँगेय राघव की कहानियाँ भी उतनी ही सशक्त हैं जितने उनके उपन्यास। उन्होंने हिंदी कहानी को यथार्थ के नए धरातल पर खड़ा किया। उनकी कहानियों में प्रेम, करुणा, पीड़ा, विद्रोह और मानवीय संघर्ष के विविध रंग देखने को मिलते हैं।

उनकी प्रसिद्ध कहानियों में 'टोपी शुक्ला', 'जहरीली हवा', 'अंतहीन', 'पार', 'सांकल' आदि शामिल हैं। उनकी कहानियों में शिल्प की नवीनता और भाषा की सजीवता अद्वितीय है।

नाट्य साहित्य में योगदान: राँगैय राघव ने कुछ नाटक भी लिखे जो समाज के ज्वलंत मुद्दों पर आधारित हैं। उनके नाटक सामाजिक चेतना से भरपूर होते थे और उनमें मंचन की गहन संभावनाएँ थीं। उन्होंने नाट्य साहित्य को सामाजिक यथार्थ से जोड़ने का प्रयास किया।

विचारधारा और साहित्यिक दृष्टिकोण : राँगैय राघव मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित थे, परंतु उनका साहित्य किसी वाद की जड़ता में नहीं बंधा। उन्होंने वर्ग संघर्ष, जातिवाद, स्त्री शोषण, धार्मिक पाखंड और सामाजिक विषमता को उजागर करते हुए एक मानवीय दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

उनकी विचारधारा में परिवर्तन की चेतना और क्रांति का संदेश था, परंतु वह सांस्कृतिक मूल्यों की अवहेलना नहीं करते थे। वे यथार्थ को उसकी समग्रता में पकड़ने में समर्थ थे।

भाषा और शिल्प : राँगैय राघव की भाषा अत्यंत सजीव, प्रवाहमयी और यथार्थपरक है। उन्होंने कथानक और चरित्रों की बुनावट में नवीनता लाई। उनकी भाषा में संवादात्मकता और चित्रात्मकता का सुंदर समन्वय है।

उनकी शैली में जहां एक ओर आत्मकथात्मक प्रवृत्ति है, वहीं दूसरी ओर व्यंग्य, प्रतीक और बिंबों का प्रभावी प्रयोग भी देखने को मिलता है।

समकालीनता और प्रासंगिकता : राँगैय राघव का साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था। आज जब समाज में पुन: जातिवाद, धार्मिक असहिष्णुता, आर्थिक असमानता और स्त्री शोषण की घटनाएँ बढ़ रही हैं, तब राघव का साहित्य हमें न केवल चेताता है, बल्कि मार्गदर्शन भी करता है।

उनकी रचनाएँ सामाजिक चेतना, आत्मविश्लेषण और बदलाव की प्रेरणा देती हैं। युवा वर्ग में जागरूकता लाने और साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का जो प्रयास उन्होंने किया था, वह आज भी अनुकरणीय है।

आलोचकों की दृष्टि में राँगैय राघव : हिंदी के प्रमुख आलोचकों ने राँगैय राघव को 'प्रगतिशील यथार्थवाद' का समर्थ लेखक माना है। नामवर सिंह, रामविलास शर्मा, डॉ. नगेन्द्र आदि आलोचकों ने उनके साहित्य को गंभीरता से सराहा और उसके सामाजिक महत्व को स्वीकार किया।

नामवर सिंह ने कहा था कि – "राँगैय राघव ने जिस साहस के साथ यथार्थ की परतों को उघाड़ा है, वह हिंदी साहित्य के लिए एक चुनौती और प्रेरणा दोनों है।"

अध्ययन का महत्व : राँगैय राघव का साहित्य केवल रचना मात्र नहीं, अपितु सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक मूल्यबोध का जीवंत दस्तावेज है। इस अध्ययन का महत्व इसलिए भी अत्यधिक है क्योंकि यह हिंदी साहित्य के एक ऐसे लेखक पर केंद्रित है जो अपनी गहन सामाजिक दृष्टि, विचारात्मक स्पष्टता और साहित्यिक शुद्धता के लिए जाने जाते हैं। समाज में व्याप्त वर्गीय संघर्ष, जातिवादी संरचना, स्त्री–शोषण, धार्मिक पाखंड तथा औपनिवेशिक प्रभावों के विरुद्ध उन्होंने लेखनी को एक हथियार की तरह प्रयुक्त किया। इस शोध के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार राँगैय राघव का साहित्य एक सामाजिक दस्तावेज के रूप में कार्य करता है और भारतीय जनमानस के संघर्षों, आकांक्षाओं तथा बदलाव की चेतना को स्वर

देता है। यह अध्ययन छात्रों, शोधार्थियों, और हिंदी साहित्य के अध्येताओं के लिए उपयोगी है क्योंकि यह राँगेय राघव के साहित्य में अंतर्निहित विचारधाराओं, यथार्थवादी दृष्टिकोण, और सामाजिक प्रतिबद्धताओं को उभारता है। साथ ही, यह वर्तमान समय की सामाजिक समस्याओं की पड़ताल करने के लिए राघव के साहित्य को एक सशक्त उपकरण के रूप में प्रस्तुत करता है। आज जब साहित्य में पुन: सामाजिक दायित्वों पर बल दिया जा रहा है, तब राँगेय राघव का साहित्य युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकता है। उनका लेखन न केवल आलोचनात्मक दृष्टि प्रदान करता है, बल्कि सामाजिक बदलाव के लिए आत्ममंथन और सक्रिय भागीदारी की भावना भी जगाता है। इस लेख के माध्यम से यह भी स्पष्ट किया गया है कि साहित्य को केवल सौंदर्य या मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि समाज को दिशा देने के लिए भी प्रयोग में लाया जा सकता है!

निष्कर्ष : राँगेय राघव हिंदी साहित्य के ऐसे युगप्रवर्तक रचनाकार थे जिन्होंने साहित्य को समाज से जोड़ते हुए उसे बदलाव का माध्यम बनाया। उनका संपूर्ण साहित्य इस बात का सशक्त प्रमाण है कि साहित्यकार केवल कल्पनालोक का बुनकर नहीं होता, बल्कि वह समाज का सजग प्रहरी और परिवर्तन का संवाहक होता है। राँगेय राघव ने अपने जीवन के संक्षिप्त काल में जितनी व्यापक, विविध और गहन रचनाएँ प्रस्तुत कीं, वे आज भी हिंदी साहित्य की धरोहर के रूप में मूल्यवान हैं। उनकी प्रमुख कृतियों – 'कब तक पुकारूँ', 'घरौंदा', 'मुर्दों का टीला', 'चंद्रकांता की वापसी' आदि – में न केवल यथार्थ की पीड़ा और जटिलताएँ उभरी हैं, बल्कि उसमें संघर्ष, चेतना और सामाजिक सुधार की चेतवानी भी दी गई है। राँगेय राघव ने साहित्य को केवल मनोरंजन या नैतिक शिक्षा का साधन न मानते हुए उसे समाज में व्याप्त विषमताओं को उजागर करने और उनके समाधान की दिशा में सार्थक संवाद बनाने का माध्यम बनाया। राघव का साहित्य बहुआयामी है। उसमें वर्ग चेतना है, जाति व्यवस्था के प्रति विद्रोह है, स्त्री की सामाजिक स्थिति पर गंभीर विमर्श है, और एक संवेदनशील मानवतावादी दृष्टिकोण है। वे मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित रहे, लेकिन अंधानुकरण की बजाय उन्होंने समाज की स्थिति के अनुरूप विचारों का समायोजन किया। यही कारण है कि उनका लेखन किसी एक विचारधारा में बंधा हुआ नहीं दिखाई देता, बल्कि वह समय, समाज और संस्कृति के साथ संवाद करता हुआ दिखाई देता है।

उनकी भाषा और शैली में एक गहरी आत्मीयता, सजीवता और लोक अनुभव की खुशबू है। संवादों की सजीवता, प्रतीकों का प्रयोग, चरित्रों की जटिल गढ़न और शिल्प की नवीनता उनके लेखन को विशिष्ट बनाती है। उन्होंने शोषण, अंधविश्वास, दमन, पाखंड जैसे विषयों को इतनी गहराई से उठाया कि उनके पात्र और परिस्थितियाँ पाठक के भीतर एक वैचारिक आंदोलन की शुरुआत कर देते हैं।

आज जब हम राँगेय राघव के साहित्य को देखते हैं तो पाते हैं कि यह केवल उनके समय का दस्तावेज नहीं, बल्कि यह वर्तमान समाज की समस्याओं को भी उतनी ही तीव्रता से उजागर करता है। उनका साहित्य स्त्री अधिकारों, सामाजिक न्याय, वर्ग-संघर्ष और सांस्कृतिक अस्मिता की आज भी उतनी ही प्रासंगिक व्याख्या करता है जितना स्वतंत्रता के बाद के भारत में करता था। यही कारण है कि राँगेय राघव को केवल एक साहित्यकार के रूप में देखना उनके योगदान को सीमित करना होगा। वे विचारक थे, पथ-प्रदर्शक थे, और संवेदना के लोकनायक थे। उनके साहित्य में वह शक्ति है जो पाठकों को सोचने, आत्ममंथन करने और समाज के प्रति उत्तरदायी बनने की प्रेरणा देती है। इस प्रकार, राँगेय राघव का योगदान हिंदी साहित्य में एक युगांतकारी पड़ाव

के रूप में दर्ज किया जाता है। वे एक ऐसे साहित्यिक योद्धा थे जिन्होंने साहित्य को परिवर्तन की मशाल बना दिया—और यही उनकी सबसे बड़ी साहित्यिक उपलब्धि है।

संदर्भ सूची;

1. शर्मा, रामविलास (2003). हिंदी साहित्य और समाज. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. (पृ. 112–145)
2. सिंह, नामवर (1999). कहानी नई कहानी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. (पृ. 87–101)
3. शुक्ल, नागेंद्र (2000). हिंदी उपन्यास: विकास और दिशा. वाराणसी: साहित्य भवन. (पृ. 132–150)
4. दुबे, प्रेमशंकर (2011). राँगेय राघव के उपन्यास: एक विश्लेषण. लखनऊ: साहित्य संगम. (पृ. 42–95)
5. गुप्त, भूपेंद्रनाथ (2017). हिंदी साहित्य के निर्माता. दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन. (पृ. 222–235)
6. सिंह, सुरेश (2005). प्रगतिशील साहित्य और विचारधारा. पटना: प्रभात प्रकाशन. (पृ. 78–115)
7. मिश्र, रमेश (2010). हिंदी कहानियों का समाजशास्त्र. बनारस: साहित्य लोक. (पृ. 50–93)
8. चौधरी, मोहन (2020). राँगेय राघव: यथार्थ के पथिक. दिल्ली: नीलांबर पब्लिकेशन. (पृ. 10–67)
9. पांडेय, कमलाकांत (1995). हिंदी में नाट्य चेतना. प्रयागराज: हिंदी साहित्य परिषद. (पृ. 33–70)
10. सिंह, श्याम नारायण (2001). राँगेय राघव और सामाजिक दृष्टिकोण. भागलपुर: ज्ञानलोक. (पृ. 14–49)